22E
100 Marks

टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे

संस्कृत पारंगत (एम.ए.) बहि:स्थ

परीक्षा: डिसेंबर – २०२३

सत्र १ ले

विषय: सौन्दरनन्द (22E316)

दिनांक: १८/१२/२०२३	गुण : १००	वेळ : स. १०.०० ते १.००

सूचना: १) उजवीकडील अंक त्या प्रश्नांचे गुण दर्शवितात. २) सर्व प्रश्न सोडवणे अनिवार्य.

प्र. १. स्वभाषया अनुवादं कुरुत। (केषांचित् पञ्च श्लोकानाम्) **(३०)**

१. तथा लोलेन्द्रियो भूत्वा दायितेन्द्रियगोचर:।
इन्द्रियार्थवशादेव बभूव नियतेन्द्रिय:।।

२. यथा फलविशेषार्थं बीजं वपति कार्षक:।
तद्वद्विषयकार्पण्याद्विषयांस्त्यक्तवानसि।।

३. श्येनाय प्राणित्सल्यात्स्वमांसान्यपि दत्तवान्।
शिबि: स्वर्गात्परिभ्रष्टस्तादृक्कृत्वापि दुष्करम्।।

४. कषायवस्त्रौ कनकावदातौ विरेजस्तुतौ नभसि प्रसन्ने।
अन्योन्यसंश्लिष्ट विकीर्णपक्षौ सर: प्रकीर्णाविव चक्रवाकौ।।

५. तस्मात्तु यूथादपसार्यमाणां निपीडितालक्तकरक्तवक्त्राम्।
शाखामृगीमेकविपन्नदृष्टिं दृष्ट्वा मुनिर्नन्दमिदं बभाषे।।

६. ऐन्द्र वनं तच्च ददर्श नन्द: समन्ततो विस्मयफुल्लदृष्टि:।
हर्षान्विताश्चाप्सरस: परीयु: सगर्वमन्योन्यमवेक्षमाणा:।।

प्र. २. स्वर्गनिन्दासर्गस्य समीक्षणं कुरुत। **(१५)**

प्र.३. सुगत: नन्दं स्वर्गदर्शनं किमर्थमकारयत्। **(१५)**

प्र. ४. ‘अश्वघोषस्य काल: लेखनं कार्यं च’ इत्येतद् विषयमधिकृत्य निबन्ध: लेख्य:। **(२०)**

प्र. ५. चतुर्णां वाक्यानां ससन्दर्भं स्पष्टीकरणं कुरुत। **(२०)**

१. रजस्तथास्मै मुनिराचकर्ष।

२. सर्वो महान्हेतुरणोर्वधाय।

३. महारथ इवोन्मार्गादप्रमत्तस्य सारथे:।

४. दु:खमन्विच्छति भवांस्तथा विषयतृष्ठाया।

५. दुर्लभं तु प्रियंहितं स्वादु पश्यमिवौषधम्।